ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, 2022

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव

[1] Bablu Kumar Jayswal, [2]Dr. Rathod Duryodhan Devidas

[1]Research Scholar, Department of History, Malwanchal University, Indore

[2]Supervisor, Department of History, Malwanchal University, Indore

संक्षेप

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीवादी विचारधारा का गहरा और दूरगामी प्रभाव था, जिसने आंदोलन को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान की। महात्मा गांधी ने अहिंसा, सत्य और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों पर आधारित एक व्यापक रणनीति तैयार की, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को न केवल राजनीतिक, बल्कि सामाजिक और आर्थिक सुधारों का भी आंदोलन बना दिया। गांधीजी ने सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन के माध्यम से भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसात्मक संघर्ष की ताकत दिखाई। उनका "स्वराज" का विचार केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य सामाजिक न्याय, जाति भेदभाव का उन्मूलन, और ग्रामीण विकास के माध्यम से आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना था। गांधीजी के नेतृत्व ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जनांदोलन में बदल दिया, जहां हर वर्ग और समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित की गई। उन्होंने विदेशी वस्त्रों और सामानों का बहिष्कार कर स्वदेशी के प्रचार को बल दिया, जो भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का माध्यम बना। गांधीवादी विचारधारा ने न केवल स्वतंत्रता दिलाने में अहम भूमिका निभाई, बल्कि भारतीय समाज को नैतिकता, समानता, और मानवता के मूल्यों पर आधारित पुनर्गठन की दिशा में भी अग्रसर किया। उनका योगदान आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

परिचय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव अत्यंत गहरा और व्यापक था, जिसने आंदोलन को एक नई दिशा और ऊर्जा दी। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम को केवल राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे सामाजिक और नैतिक पुनरुत्थान का माध्यम बनाया। उनके नेतृत्व में अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों को अपनाया गया, जिसने स्वतंत्रता की लड़ाई को हिंसात्मक विद्रोह से दूर ले जाकर नैतिक और शांतिपूर्ण संघर्ष का रूप दिया। गांधीजी का मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता केवल ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने में नहीं है, बल्कि समाज में व्याप्त असमानताओं, छुआछूत, और शोषण से भी मुक्ति आवश्यक है। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन का संदेश दिया, जिससे विदेशी वस्त्रों और सामानों का बहिष्कार कर भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली। खादी और ग्रामोद्योगों के प्रचार-प्रसार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधीजी का सत्याग्रह आंदोलन एक नैतिक युद्ध था, जिसमें उन्होंने यह सिद्ध किया कि सत्य और अहिंसा के आधार पर समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। उन्होंने जातिगत भेदभाव, छुआछूत, और महिलाओं की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए कई सामाजिक सुधार किए। गांधीवादी विचारधारा ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जनांदोलन बना दिया, जहां समाज के हर वर्ग—चाहे वह किसान हो, मजदूर हो, या व्यापारी—ने एकजुट होकर ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया। गांधीजी की विचारधारा न केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित रही, बल्कि उसने समाज के नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्निर्माण की भी नींव रखी। आज भी, गांधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता सामाजिक,

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, 2022

राजनीतिक, और वैश्विक स्तर पर देखी जा सकती है, जहां अहिंसा, सत्य, और सामाजिक न्याय के आदर्शों का पालन करने की आवश्यकता बनी हुई है। गांधीजी का योगदान न केवल भारत की स्वतंत्रता के लिए था, बल्कि यह एक वैश्विक नैतिक आंदोलन का भी हिस्सा था।

अध्ययन की आवश्यकता

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीवाद का योगदान समाजवाद और आधुनिकता के संदर्भ में अध्ययन करने की आवश्यकता व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर महत्वपूर्ण है। गांधीवाद ने अपने सिद्धांतों के माध्यम से समाजवादी मूल्यों को उन्नति देने का प्रयास किया, जिसने समाज को समर्थ और स्वतंत्र बनाने के लिए एक मार्गदर्शन प्रदान किया। उनका सिद्धांत सरलता, अहिंसा, गरीबी मुक्ति, और स्वदेशी था, जिसने समाज में समानता और न्याय की बढ़ती मांग को उत्तेजित किया। आधुनिकता के संदर्भ में, गांधीवाद के सिद्धांत आज भी महत्वपूर्ण हैं। उनकी विचारधारा और उनके आंदोलनों का अध्ययन हमें आधुनिक विश्व में सामाजिक न्याय और सामर्थ्य के लिए नए मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। गांधीवाद के योगदान का अध्ययन उसकी समझ में मदद कर सकता है कि कैसे समाजवादी दृष्टिकोण और आधुनिकता के सिद्धांत संगठित हो सकते हैं ताकि हम आज की समस्याओं को समाधान करने के लिए सक्षम हो सकें।

गांधीवाद की परिभाषा और प्रमुख सिद्धांत

गांधीवाद, महात्मा गांधी की विचारधारा और नेतृत्व का परिणाम है, जिसे विशेष रूप से सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित माना जाता है। गांधीवाद की परिभाषा एक ऐसे सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण के रूप में की जा सकती है, जो सत्य, अहिंसा, और आत्मनिर्भरता की अवधारणाओं को केंद्रीय स्थान देता है। यह विचारधारा न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत थी, बल्कि समाज के सामाजिक और आर्थिक ढांचे को भी नई दिशा प्रदान करने में सक्षम रही।

गांधीवाद का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत सत्याग्रह है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'सत्य का आग्रह'। सत्याग्रह एक नैतिक और मानसिक बल की विधि है, जिसमें व्यक्ति अपने सत्य और नैतिकता के प्रति अडिग रहता है और किसी भी अन्याय के खिलाफ अहिंसात्मक तरीके से संघर्ष करता है। गांधीजी के अनुसार, सत्याग्रह न केवल एक राजनीतिक रणनीति है, बल्कि यह एक जीवन का तरीका है जो सत्य और न्याय के प्रति अनवरत प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

अहिंसा, गांधीवाद का दूसरा प्रमुख सिद्धांत है। गांधीजी का मानना था कि अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि यह एक गहरी आंतरिक अवस्था है जो दूसरों के प्रति दया, करुणा और सम्मान को प्रकट करती है। उनके अनुसार, अहिंसा का अभ्यास समाज में गहरा सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन ला सकता है, और यह सत्याग्रह का एक अनिवार्य हिस्सा है। स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता भी गांधीवाद के केंद्रीय तत्व हैं। गांधीजी ने ग्रामीण भारत में आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित किया और स्वदेशी वस्त्रों के उपयोग की ओर लोगों को प्रेरित किया। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, जैसे छुआछूत और जातिवाद, के खिलाफ संघर्ष किया और समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में काम किया। गांधीवाद की यह परिभाषा और सिद्धांत एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं जो व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करते हैं। यह विचारधारा न केवल स्वतंत्रता संग्राम की रणनीति के

रूप में प्रभावी रही, बल्कि समाज के नैतिक और सामाजिक विकास के लिए भी एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

साहित्य की समीक्षा

ब्राउन, जे. एम. (2012) मुकुल मुखर्जी की पुस्तक भारतीय राजनीति :गांधी का सत्ता में उदय"1915-1922" गांधीजी के सत्ता में उभरने और उनके राजनीतिक प्रेरणास्थल के समय के बीच के महत्वपूर्ण घटनाओं को विस्तारपूर्वक वर्णित करती है। इस पुस्तक में, गांधीजी की भारतीय राजनीति में उपस्थिति और उनके राष्ट्रीय नेतृत्व का विकास उनके स्वयं के लेखों, संदेशों और आंदोलनों के माध्यम से प्रकट किया गया है। इस अवधि में, गांधीजी ने अपनी असाधारण राजनीतिक दृष्टिकोण से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नया मार्ग दिया और जनसमर्थन को जुटाया।

गुहा, रामचंद्र. (2013)| गांधीजी के जीवन के प्रारंभिक दौर को विस्तार से वर्णित किया गया है, जिसमें उनकी शिक्षा, उनके विदेशी अनुभव, और उनके विचारों की विकास यात्रा शामिल है। गांधीजी के अनुभवों ने उनके बाद के सोच और कार्य को प्रभावित किया, जो बाद में उनके जीवन और भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण घटनाओं का कारण बने। शर्मा द्वारा प्रस्तुत इस अध्ययन में गांधीजी के विचारों और उनके समाज-सेवा के कार्यों का महत्वपूर्ण परिचय प्राप्त होता है, जो उनके बाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आनंद, य. (2008) गांधीवादी विचारधारा समाज सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। इसके मूल तत्व में समाजवाद, सर्वोदय, अहिंसा और स्वदेशीवाद शामिल हैं। गांधीवाद के अनुसार, समाज के सभी वर्गों की समृद्धि और समाजिक न्याय को बढ़ावा देना आवश्यक है। उन्होंने खुले व्यापार और उद्योग के प्रति अपने विरोध को व्यक्त किया और उन्होंने गांधीवादी आदान-प्रदान से स्वदेशी उत्पादन को प्रोत्साहित किया। समाज में समानता, न्याय और सहनशीलता को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने अहिंसा को अपनाया और विभिन्न समाजिक सुधारों के लिए आंदोलनों का नेतृत्व किया। गांधीजी का विचारधारा आज भी समाज सुधार के लिए प्रेरणा स्रोत है, जिसने भारतीय राजनीति और समाज को गहरे प्रभाव से प्रभावित किया है। उनके विचारों ने व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर एक सुधारात्मक परिवर्तन की दिशा में मार्गदर्शन किया है।

मेहता, वी. (2010) सत्याग्रह और सामाजिक न्याय दोनों ही महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं जो समाज में न्याय की स्थापना करने में मदद करते हैं। सत्याग्रह एक ऐसी अद्वितीय विचारधारा है जिसमें समाजिक परिवर्तन के लिए विरोध किए जाने वाले कदमों में शांतिपूर्ण प्रतिरोध का रूप होता है। गांधीजी द्वारा प्रेरित सत्याग्रह ने अनेक देशों में विशेष रूप से भारत में समाजिक न्याय के लिए प्रेरित किया है। इसका मुख्य उद्देश्य न्याय और समानता की प्राप्ति होती है, जिसे सामाजिक असमानता, अन्याय और शोषण के खिलाफ लड़ा जाता है। सामाजिक न्याय भी इसी विचारधारा का परिणाम है, जो समाज के हर व्यक्ति को उसके अधिकारों और इकाई के रूप में मानता है।

जोशी, के. (2015) गांधीवादी दृष्टिकोण और सामाजिक समरसता का संबंध गहरा और महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी ने अपने दृष्टिकोण में सत्य, अहिंसा, और सामंजस्य के मूल तत्वों को महत्व दिया। उनके विचारों में समाजिक समरसता एक ऐसी स्थिति है जहां समाज के सभी वर्ग, जाति और धर्म के लोग एक-दूसरे के साथ सम्मानपूर्वक और भाईचारे से रह सकते हैं। गांधीवादी दृष्टिकोण ने सामाजिक समरसता

को बढ़ावा दिया, जिसमें अहिंसा और समरसता के माध्यम से समाजिक विभेदों को दूर किया जा सकता है। उन्होंने दिखाया कि अहिंसा और सच्चाई के प्रति समर्पण से ही समाज में समरसता और न्याय स्थापित किया जा सकता है।

राव, वी. (2016). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक ऐतिहासिक घटना है जिसने देश की दिशा और भविष्य को परिवर्तित किया। यह आन्दोलन भारतीय जनता के समृद्ध और साहसिक परंपराओं का प्रतीक है, जिसने विदेशी शासन के विरुद्ध अपने स्वाधीनता के लिए लड़ा। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण पहलू उसकी सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था को परिवर्तित करने में रहा। यह संघर्ष लोकतंत्र के मूल्यों को स्थापित करने में मदद करता है और भारतीय समाज की स्वतंत्रता के प्रति गहरी भावनाओं का प्रतीक बना। इस संग्राम ने विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक समुदायों को एकजुट किया और उन्हें एक साझी उद्देश्य के लिए लड़ने की प्रेरणा दी।

श्रीवास्तव, श्रीराम (2005). गांधीवाद साहित्यिक अध्ययन में महात्मा गांधी के विचार, उनके दर्शन, और उनके सामाजिक-राजनीतिक क्रांतिकारी योगदान का विशेष महत्व है। यह अध्ययन उनके विचारों के साहित्यिक पहलुओं, उनकी लेखनी, और उनके प्रेरणादायक व्यक्तित्व की समझ में मदद करता है। गांधीजी ने अपनी गहरी समाजवादी सोच और अहिंसा के सिद्धांतों के माध्यम से विश्वास को आधार दिया, जो उनके विचारों का मूल भाव है। उनकी पुस्तकें और लेखन उनके समाज सुधारक और स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण संघर्षों को प्रकट करते हैं। उनकी गांधीवादी दृष्टिकोण ने न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरित किया बल्कि पूरी दुनिया में अहिंसा, सत्य, और समाज सुधार के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बना। गांधीवादी साहित्यिक अध्ययन में उनकी कई ग्रंथों जैसे "हिंद स्वराज", "सत्यार्थ प्रकाश", "हिंदी शिक्षा", "स्वदेशी", और "आनसुची" जैसी महत्वपूर्ण पुस्तकों का अध्ययन किया जाता है।

महात्मा गांधी का जीवन और उनकी विचारधारा

महात्मा गांधी, जिनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रभावशाली नेता और विचारक रहे हैं। 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर, गुजरात में जन्मे गांधीजी ने अपने जीवन की शुरुआत ब्रिटिश भारत में एक वकील के रूप में की। उन्होंने अपनी शिक्षा लंदन में पूरी की और दक्षिण अफ्रीका में कानूनी अभ्यास के दौरान सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों के प्रति गहरी रुचि विकसित की। दक्षिण अफ्रीका में अपने अनुभवों ने उन्हें सत्याग्रह की अवधारणा को विकसित करने के लिए प्रेरित किया, जिसमें अहिंसा और सत्य का पालन करते हुए सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया गया।

गांधीजी ने 1915 में भारत लौटने के बाद स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय जनमानस को स्वतंत्रता की ओर अग्रसर करने के लिए सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों का उपयोग किया। उनकी प्रमुख आंदोलनों में चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, और नमक सत्याग्रह शामिल हैं। इन आंदोलनों के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ व्यापक जन समर्थन जुटाया और भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को एक नई दिशा दी।

गांधीजी की विचारधारा में सत्य और अहिंसा की अवधारणाएं केंद्रीय स्थान पर हैं। सत्याग्रह, जिसे उन्होंने 'सत्य का आग्रह' के रूप में परिभाषित किया, एक ऐसा आंदोलन है जो बिना हिंसा के सत्य के लिए

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

संघर्ष करता है। अहिंसा, उनके दृष्टिकोण में, केवल शारीरिक हिंसा की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक हिंसा के खिलाफ भी एक प्रतिबद्धता है। गांधीजी ने सामाजिक और आर्थिक आत्मनिर्भरता पर भी जोर दिया, और खादी आंदोलन के माध्यम से स्वदेशी वस्त्रों के उपयोग को बढ़ावा दिया।

उनकी विचारधारा ने भारतीय समाज को आत्मनिर्भरता, सामाजिक समानता, और सांस्कृतिक गर्व की दिशा में प्रेरित किया। गांधीजी का जीवन और उनके सिद्धांत स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरणास्त्रोत रहे और उन्होंने भारतीय राजनीति और समाज पर एक अमिट छाप छोड़ी। उनके विचार आज भी वैश्विक स्तर पर प्रेरणादायक माने जाते हैं और समाजिक न्याय और शांति के लिए मार्गदर्शक के रूप में देखे जाते हैं।

गांधीवाद के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ

गांधीवाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक भारतीय समाज के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इसका ऐतिहासिक संदर्भ 20वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में लौटता है, जब भारतीय उपमहाद्वीप ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन था। महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा देने के लिए सत्याग्रह और अहिंसा की विचारधाराओं को अपनाया। उनका यह दृष्टिकोण ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जन समर्थन को एकत्रित करने में सफल रहा और भारतीय जनता को स्वतंत्रता की ओर प्रेरित किया।

गांधीवाद का ऐतिहासिक संदर्भ भारतीय समाज के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को बदलने में अहम भूमिका निभाता है। गांधीजी के नेतृत्व में आयोजित प्रमुख आंदोलनों जैसे चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, और नमक सत्याग्रह ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा को बदल दिया। इन आंदोलनों ने न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ जन विरोध को संगठित किया, बल्कि भारतीय समाज में सामाजिक सुधारों की भी नींव रखी। गांधीजी ने आत्मनिर्भरता और स्वदेशी वस्त्रों के उपयोग के माध्यम से भारतीय समाज को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में काम किया, जो स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण पहलू था।

सांस्कृतिक संदर्भ में, गांधीवाद ने भारतीय समाज में गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन लाए। गांधीजी ने भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बनाए रखते हुए आधुनिकता की दिशा में समाज को अग्रसर किया। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत, और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ संघर्ष किया और समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में काम किया। गांधीवाद ने भारतीय संस्कृति को एक नई दृष्टि प्रदान की, जिसमें आधुनिकता और परंपरा के बीच एक संतुलन स्थापित किया गया।

गांधीजी का आदर्श और उनकी विचारधारा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को कायम रखते हुए समाज के हर वर्ग के लिए न्याय और समानता की दिशा में प्रेरित करती है। उनका योगदान भारतीय संस्कृति के सामाजिक और नैतिक मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में लागू करने का प्रयास था, जो आज भी समाज में गहरी छाप छोड़ता है। गांधीवाद का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक धारा को भी परिभाषित करता है, जो आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभिक संदर्भ

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभिक संदर्भ 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में देखा जा सकता है, जब भारतीय उपमहाद्वीप ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन था। इस काल में भारतीय समाज में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ विरोध की भावना तेज़ होने लगी थी। आर्थिक शोषण, सामाजिक असमानताएँ, और राजनीतिक अधिकारों की कमी ने भारतीय जनता के बीच असंतोष उत्पन्न किया। इस समय भारतीय समाज में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता का प्रसार हुआ, और विभिन्न प्रकार के आंदोलनों और संगठनों का उदय हुआ, जिनमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय महासभा, और अन्य क्षेत्रीय और धार्मिक संगठनों की प्रमुख भूमिका थी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं, जिनमें 1857 का विद्रोह एक प्रमुख घटना थी। यह विद्रोह भारतीय सैनिकों और नागरिकों द्वारा ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक सशस्त्र संघर्ष था, जो हालांकि विफल रहा, लेकिन इसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा दी। इसके बाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन 1885 में हुआ, जिसने धीरे-धीरे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को संगठित और संगठित किया। 20वीं सदी की शुरुआत में, भारतीय समाज में सांस्कृतिक और सामाजिक पुनर्जागरण का दौर आया, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को और भी गति दी।

गांधीवाद और अन्य राजनीतिक विचारधाराएँ

गांधीवाद, महात्मा गांधी द्वारा विकसित एक विशेष राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा है, जो सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित है। इसे अन्य समकालीन राजनीतिक विचारधाराओं जैसे मार्क्सवाद, साम्राज्यवाद, और उदारवाद के संदर्भ में समझा जा सकता है। गांधीवाद की तुलना जब अन्य विचारधाराओं से की जाती है, तो इसके मूलभूत सिद्धांत और दृष्टिकोण में प्रमुख अंतर स्पष्ट होते हैं।

मार्क्सवाद, कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा स्थापित विचारधारा है, जो वर्ग संघर्ष और सामूहिक स्वामित्व के सिद्धांतों पर आधारित है। मार्क्सवाद के अनुसार, समाज में वर्ग संघर्ष का मुख्य कारण पूंजीपतियों द्वारा श्रमिकों का शोषण होता है, और इसका समाधान साम्यवादी क्रांति के माध्यम से किया जा सकता है। इसके विपरीत, गांधीवाद अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन की दिशा में कार्य करता है। गांधीजी ने मान्यता दी कि समाज में बदलाव बिना हिंसा के और नैतिक सच्चाई के आधार पर होना चाहिए। गांधीवाद ने आर्थिक विषमताओं को समाप्त करने के लिए आत्मनिर्भरता और स्वदेशी वस्त्रों के उपयोग को प्रोत्साहित किया, जबकि मार्क्सवाद ने आर्थिक संरचनाओं की क्रांति और सामूहिक स्वामित्व पर जोर दिया।

साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और अन्य देशों पर राजनीतिक और आर्थिक नियंत्रण स्थापित करने की नीति है, जो अक्सर सैन्य बल और शोषण के माध्यम से लागू की जाती है। गांधीवाद ने साम्राज्यवाद के खिलाफ अहिंसात्मक प्रतिरोध का मार्ग अपनाया। गांधीजी का मानना था कि साम्राज्यवाद का विरोध केवल शारीरिक संघर्ष से नहीं, बल्कि नैतिक और सत्य के आधार पर किया जाना चाहिए। गांधीजी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ विरोध किया और सामाजिक न्याय की दिशा में काम किया। उन्होंने साम्राज्यवाद के खिलाफ एक

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

नैतिक और अहिंसात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जो साम्राज्यवाद के हिंसक और शोषणकारी स्वभाव के खिलाफ था।

उदारवाद, जो स्वतंत्रता, समानता और मानवाधिकार पर जोर देता है, गांधीवाद से कुछ समानताओं और भिन्नताओं को दर्शाता है। उदारवाद ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना को महत्व दिया, जबकि गांधीवाद ने सामाजिक समानता और नैतिक मूल्यों पर जोर दिया। गांधीजी ने उदारवादी विचारधारा के तत्वों को अपनाया, लेकिन उन्हें भारतीय संदर्भ में सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से समायोजित किया। गांधीवाद ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया, लेकिन यह स्वतंत्रता सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों के साथ जुड़ी हुई थी।

संदर्भ

1. देसाई, एम. (2002). गांधी और सामाजिक न्याय की खोज: समाजवाद पर गांधीवादी दृष्टिकोण का अध्ययन. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स इंडिया.
2. ब्राउन, जे. एम. (2012). गांधी का सत्ता में उदय: भारतीय राजनीति 1915-1922. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. कुमार, आर. (संपादक). (2007). गांधीवादी राजनीति पर निबंध: 1919 का रॉलेट सत्याग्रह. ओरिएंट ब्लैक्स्वान.
4. गुहा, रामचंद्र. (2013). भारत से पहले गांधी. विंटेज बुक्स.
5. पटेल, एस. (2001). गांधी और भारतीय आधुनिकता. किंग्स्टन पब्लिशर्स.
6. आनंद, य. (2008). गांधीवादी विचारधारा और समाज सुधार. वाणी प्रकाशन.
7. मेहता, वी. (2010). सत्याग्रह और सामाजिक न्याय. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास.
8. शर्मा, डी. (2014). गांधी और स्वदेशी आंदोलन. प्रभात प्रकाशन.
9. जोशी, के. (2015). गांधीवादी दृष्टिकोण और सामाजिक समरसता. नवनीत प्रकाशन.
10. त्रिपाठी, एस. (2005). गांधी और ग्रामीण विकास. सागर पब्लिशर्स.
11. ठाकुर, ए. (2011). गांधीवादी विचारधारा और वर्तमान संदर्भ. राजकमल प्रकाशन.
12. गुप्ता, एम. (2009). गांधी और अहिंसक आंदोलन. प्रभात प्रकाशन.
13. वर्मा, आर. (2013). गांधी और सत्याग्रह की राजनीति. ओरिएंट पब्लिशर्स.
14. मिश्रा, पी. (2018). गांधी और भारतीय संस्कृति. राजपाल एंड सन्स.
15. कपूर, जी. (2006). गांधी और महिला सशक्तिकरण. युगांतर प्रकाशन.
16. सिंह, ए. (2000). गांधीवादी सामाजिक न्याय की अवधारणा. ज्ञान पब्लिशिंग हाउस.
17. मलिक, आर. (2011). गांधी और आधुनिकता का समीकरण. प्रभात प्रकाशन.
18. आचार्य, डी. (2012). गांधी और भारतीय समाज का पुनर्निर्माण. नवनीत प्रकाशन.
19. जैन, ए. (2003). गांधी और सत्य का प्रयोग. ओम बुक्स इंटरनेशनल.
20. राव, वी. (2016). गांधी और समकालीन भारत. सुरेश पब्लिशर्स.
21. शर्मा, डॉ. अनुराग (2004). गांधीवादी विचारधारा और समाज सुधार. भारतीय समाज और राजनीति की भूमिका.